राज्य का मार्क्सवादी सिद्धान्त

Dr. Vini. Sharma

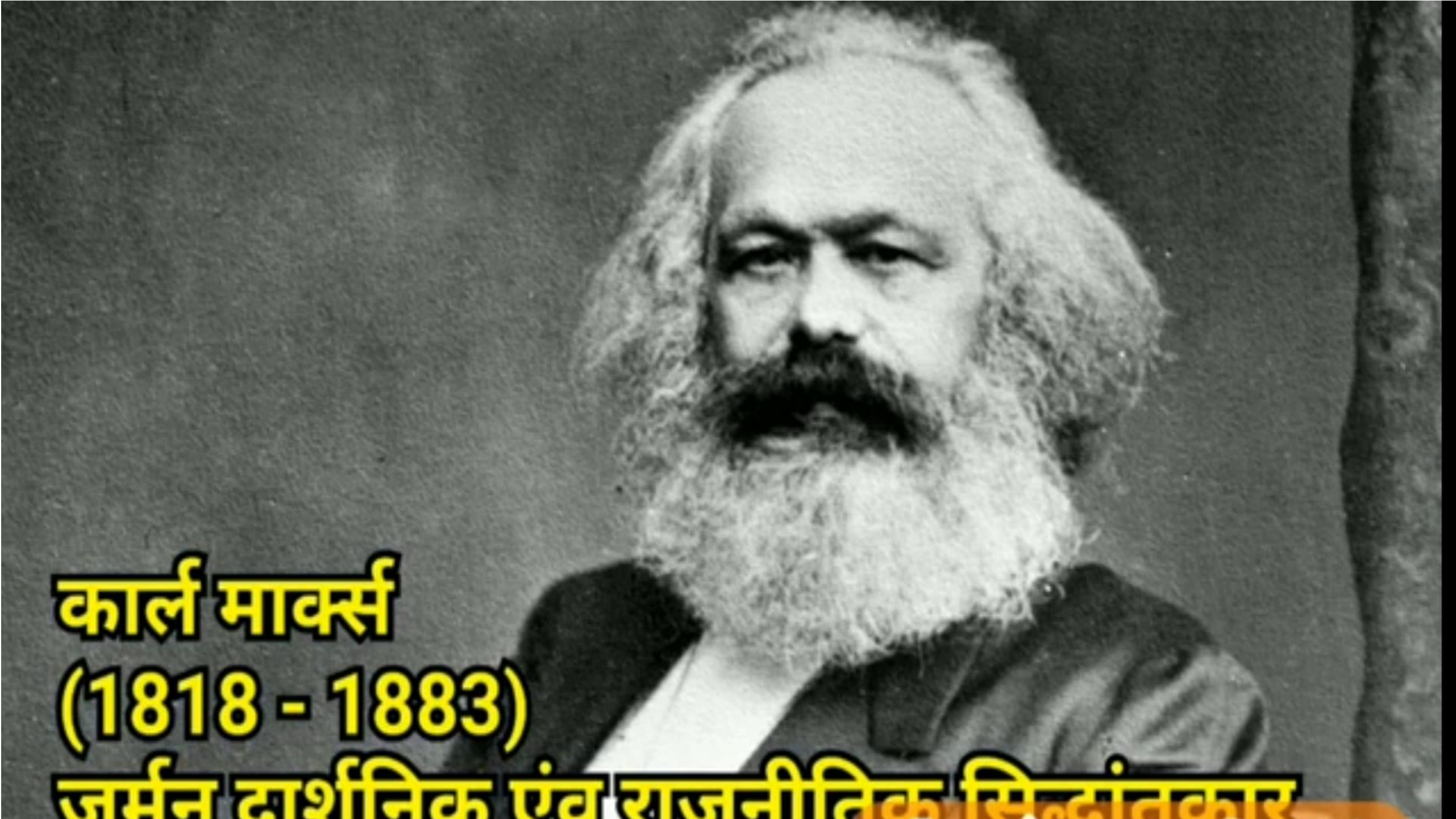
कार्ल मार्क्स
(1818 - 1883)
जर्मन दार्शनिक एंव राजनीतिक सिद्धांतकार

मार्क्सवाद का अर्थ

- मार्क्सवाद क्रांतिकारी समाजवाद का ही एक रूप है। यह आर्थिक और सामाजिक समानता में विश्वास रखता है अत: मार्क्सवाद सभी व्यक्तियो की समानता का दर्शन है। मार्क्सवाद की उत्पत्ति खुली प्रतियोगिता स्वतंत्र व्यापार आरै पूंजीवाद के विरोध के कारण हुई।
- मार्क्सवाद पूंजीवाद व्यवस्था को परिवर्तित करने और सर्वहारा वर्ग की समाजवादी व्यवस्था को स्थापित करने के लिये हिंसात्मक क्रांति को एक अनिवार्य कहता है इस क्रांति के पश्चात ही आदर्श व्यवस्था की स्थापना होगी व वर्गविहीन संघर्ष विहीन और शोषण विहीन राज्य की होगी।

- मार्क्सवादी विचारधारा के जन्मदाता कार्ल मार्क्स तथा फ्रेडरिक एन्जिल्स है। दोनों विचारको ने इतिहास समाजशास्त्र विज्ञान अर्थशास्त्र व राजनीति विज्ञान की समस्याओ पर संयुक्त रूप से विचार करके जिस निश्चित विचारधारा को विश्व के सम्मुख रखा।

- **दास केपिटल-** सामाजिक राजनीतिक दर्शन में मार्क्सवाद (Marxism) उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व द्वारा वर्गविहीन समाज की स्थापना के संकल्प की साम्यवादी विचारधारा है।

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
Dialectical Materialism

- मार्क्स ने हीगल के द्वन्द्ववाद को स्वीकार किया किन्तु हीगल के विचारो को उसने अस्वीकार किया। जहां हीगल संसार को नियामक तथा विश्व आत्माा मानता है। वहां माक्सर् भौतिक तत्व को स्वीकार करता हे। मार्क्स का मानना है कि द्वन्द्ववाद का आधार विश्व आत्मा न होकर पदार्थ ही है। यह भौतिक पदार्थ ही संसार का आधार है पदार्थ विकासमान है और उसकी गति निरंतर विकास की ओर है विकास द्वन्द्वात्मक रीति से होता है।
- वाद प्रतिवाद और संवाद के आधार पर ही विकास गतिमान रहता है

- **वाद** - मार्क्स के विचारो मे पूंजीवाद वाद है जहां दो वर्ग पूंजीपतियों व श्रमिक है एक धनवान और दूसरा निर्धन है इन दोनो के हितो मे विरोध है।
- **प्रतिवाद** - विरोधी वर्गो मे संघर्ष होना आवश्यक है इस संघर्ष में श्रमिको की विजय होगी और सर्वहारा वर्ग अर्थात श्रमिक वर्ग का अधिनायक वाद स्थापित होगा यह प्रतिवाद की अवस्था है।
- **संवाद** - दोनो अवस्थाओ मे से एक तीसरी स्थिति उत्पन्न होगी जो साम्यवादी समाज की है। इस स्थिति मे न वर्ग रहेंगे न वर्ग संघर्ष होगा और न राज्य। यह तीसरी स्थिति संवाद की स्थिति होगी।

इतिहास की आर्थिक भौतिकवादी व्याख्या
Historical Materialism

- मार्क्स के विचार में इतिहास की सभी घटनाएं आर्थिक अवस्था में होने वाले परिवर्तनो का परिणाम मात्र है।
- मार्क्स का मत है कि प्रत्येक देश मे और प्रत्येक समय मे सभी राजनीतिक सामाजिक संस्थाएं, कला रीति रिवाज तथा समस्त जीवन भौतिक अवस्थाओ व आर्थिक तत्वो से प्रभावित होती है।
- मार्क्स अपनी आर्थिक व्याख्या के आधार पर मानवीय इतिहास की छः अवस्थाएं बतलायी है जो है।

1. आदिम साम्यवादी अवस्था
2. दासता की अवस्था -
3. सामंतवादी अवस्था –
4. पूंजीवादी अवस्था
5. श्रमिक वर्ग के अधिनायकत्व की अवस्था
6. राज्यविहीन और वर्गविहीन समाज की अवस्था

वर्ग संघर्ष का सिद्धांत Conflict of class

- अब तक के समस्त समाजो का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास रहा है। कुलीन और साधारण व्यक्ति और श्रमिक निरंतर एक दूसरे के विरोध में खडे रहे है। उनमें लगातार संघर्ष जारी है। मार्क्स इससे निष्कर्ष निकाला है कि आधुनिक काल में पूंजीवाद के विरुद्ध श्रमिक संगठित होकर पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त कर देंगे तथा सर्वहारा वर्ग की तानाशाही स्थापित हो जायेगी।

अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत
surplus values

- मार्क्स की मान्यता है कि पूंजीपति श्रमिको को उनका उचित पारिश्रमिक न देकर उनके श्रम का सम्पूर्ण लाभ स्वयं हड़प लेता है मार्क्स ने माना है कि किसी वस्तु का मूल्य इसलिए होता है क्योंकि इसमें मानवीय श्रम लगा है।
- वस्तु के मूल्य का निर्धारण उस श्रम से होता है जो उस वस्तु के उत्पादन पर लगाया जाता है जिस वस्तु पर अधिक श्रम लगता हे। उसका मूल्य अधिक और जिस वस्तु के उत्पादन पर कम श्रम लगता है उसका मूल्य कम होता है।

• मार्क्सवाद की विशेषताएं

- मार्क्सवाद पूंजीवाद के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया है।
- मार्क्सवाद पूंजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने के लिये हिंसात्मक साधनो का प्रयोग करता है।
- मार्क्सवाद प्रजातांत्रीय संस्था को पूंजीपतियो की संस्था मानते है जो उनके हित के लिये और श्रमिको के शोषण के लिए बना गयी है।
- मार्क्सवाद धर्म विरोधी भी है तथा धर्म को मानव जाति के लिये अफीम कहा है।
- मार्क्सवाद अन्तराष्ट्रीय साम्यवाद मे विश्वास करते हे।
- समाज या राज्य में शाषकों और शोषितों में पूंजीपतियों और श्रमिको में वर्ग संघर्ष अनिवार्य है।

उदारवादियो के अनुसार संवैधानिक व शांतिपूर्ण उपायो के द्धारा समाज मे परिवर्तन लाया जा सकता है ।

इसके ठीक विपरीत मार्क्सवादियो ने राज्य को वर्गीय संरचना और राजनीति को वर्ग संघर्ष के रूप मे देखा है।

मार्क्सवादियो के अनुसार वह वर्ग जो आर्थिक शक्ति से सम्पन्न होता है, राजनीति के माध्यम से समाज के सम्पूर्ण राजनीतिक व सांस्कृतिक ढांचे पर छाया हुआ है, यह केवल अपने हित कि बात सोचता है जनसाधारण के हितो से उसका कोई वास्ता नही है

कार्ल मार्क्स एंगेल्स और लेनिन ने राज्य को स्पष्टतया 'वर्गीय संघर्षों ' की उपज और वर्गीय भेदो को बढ़ावा देने का साधन माना है ।

एंगिलस के अनुसार "राज्य उस यंत्र अथवा मशीन का
नाम है जिसके द्वारा एक वर्ग का
दमन करता है।"

मार्क्स के अनुसार राज्य शोषण का यंत्र होता है जो सिर्फ मजदूरों का शोषण करता है।

हर युग मे सरकार का लक्ष्य यह रहा है वह
दीन-हीन लोगो को सताए।इस वर्ग का कल्याण
तब तक संभव नही जब तक कि
सशस्त्र क्रांति के द्धारा राजसत्ता पर कब्जा
नही कर लेता,

राजसत्ता को हथियाये बिना उसका उद्धार नही होगा, यह एक ठोस तथा शाश्वत सत्य है ।